इन्द्रधनुषी अकास

इन्द्रधनुषी अकास

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

INDRADHNUSHI AKAS (इन्द्रधनुषी अकास)
Anthology of Maithili Poems by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-39-2
दाम: 150/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार एवं नव विहान अननिहारकेँ समरपित...

अनुक्रम

आमुख/09
मन-मणि/19
चल रे जीवन/21
धोब घाट/24
सासु-पुतोहु वार्ता/27
बौड़ाएल बटोही/31
अपनेपर हँसै छी/33
धोबि पाट/36
साँझ/38
सात्त्विक भाव/40
दिव्य शक्ति/42
उड़ियाएल चिड़ै/44
रणभूमि/46
सान-धार-धारा/49
पपीहाक गीत/51
विषधरक बीख/53
मिथिला केहेन/54
मौसमक मुस्की/55
आशा/57
आँखि/59
मधुरस/60
बीआ/62
महजाल/64
बाट/66

डभियाएल डगर/68
लज्जैत/70
गीत-1/72
गंग स्नान/73
फनकी/74
सभ किछु छै जालेमे/75
गंगा नहाइ/77
गोधन पूजा/79
माटिक फूल/81
झगड़ा/83
नजैर/85
कमलाधार/86
बाल कविता/87
विभूत/88
झूठ-साँच/89
नव दुनियाँ/91
पुरुषार्थ/93
सरस्वती वन्दना/95
भीड़-भार/97
सरस्वती हमर/99
अगहन/101
केना मेटत गरीबी/103

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रकाशित कृति: 105

आमुख

हम मानव विज्ञान एवं कलाक शोधमे संलग्न शोधकर्मी छी। शोधकर्मीक भाषा बहुत सामान्य, technical, आ रसहीन होइ छइ। रसहीन विधामे संलग्न शोधकर्मी साहित्य तहूमे कविता आ छन्दपर भला की लिखि सकैत अछि? उपमा, अलंकार, सौन्दर्य, स्वप्न आदि हमरा सनहक शोधकर्मीक हेतु बाहरी परिवेशक वस्तु थिक। फेर हमर की उपयोगिता ऐ रचना केर सन्दर्भमे?

हलाकि साहित्य, मानव विज्ञान आ समाज विज्ञानमे गहन सम्बन्ध छइ। साहित्यक मूल्यांकन मानव विज्ञानक दृष्टिकोणसँ होबाक चाही। पश्चिमी संसारमे ऐ तरहक परम्पराक प्रारम्भ बहुत पहिनेसँ भऽ चुकल छै मुदा भारतीय साहित्य संसारमे विशेष रूपसँ मैथिलीक मध्य ऐ तरहक प्रयोग कम छइ। साहित्य अकादमी तकमे ऐ तरहक यथार्थपर धियान नहि देल गेल अछि। साहित्य अगर समाजक स्थितिक दर्पण नहि भेल तँ केहेन साहित्य? कथा, कविता, उपन्यास अथवा कोनो रचनाकेँ समाजक कसौटीपर सही उतरबाक चाही। एकर मूल्यांकन के करत? निश्चित रूपे समाजक अध्यनमे संलग्न शोधार्थी। साहित्यक विद्यार्थी नहियोँ होइत हम समाजक अध्ययन करैबाला शोधार्थी तँ छीहे। छी हम घोर आशावादी आ पॉजीटीव। साइत अपन एही पॉजिटीव सोच आ दृष्टिकोणक कारणे हम परमादरणीय जगदीश प्रसाद मण्डल केर कविता संग्रह ‘इन्द्रधनुषी अकास’ केर आमुख लिखबाक जिम्मा लऽ लेलौं। मण्डलजी विचारसँ प्रगतिशील आ सभ तरहक लोक-विचारधारा, परिस्थिति आ परिवेशमे

सामंजस्य स्थापित करैबला साहित्यकार छथि। अल्टरनेटिव डेवलपमेन्ट आ इकोलॉजिकल कन्सेप्टकेँ स्थानीयताक दृष्टिकोणमे बुझबाक आ अपन ज्ञान गंगाकेँ कथा, उपन्यास, नाटक एवं कविताक रूपमे बहेबाक असाधारण क्षमता छन्हि मण्डलजीमे। हिनकर रचना पढ़ैत जाऊ आ ब्यौंत-पर-ब्यौंत सुनैत जाऊ! हिनकर बात आ ब्यौंत सभ सहज, चमत्कारी मुदा विश्वसनीय लागत।

मण्डलजीमे सामाजिक क्रान्ति लेबाक असाधारण क्षमता छन्हि। ई चाहैथ तँ समाजक विभिन्न वर्गक बीच भयंकर उन्माद करवनो उत्पन्न कऽ देथि। लोक आपसमे मरए कटए लगत। जाति आ वर्गक राजनीतिमे तल्लीन भऽ जाथि। मुदा हिनक विशेषता ई अछि जे ई कहिओ बदलाक भावनासँ कार्य नहि करै छथि। हिनकर क्रान्ति मिथिला भूमिमे सभ वर्ग आ सभ लोकक मध्य आपसी विचारक, मेल मिलापक क्रान्ति थिक। हिनकर क्रान्ति खाँटी शब्दक चयन आ ओकर प्रयोग करबाक क्रान्ति थिक। हिनकर क्रान्ति लगातार 40 वर्षक अनुभवकेँ निश्चिंतसँ व्यक्त करबाक क्रान्ति थिक। हिनकर क्रान्ति एकरंगी नुआ नहि अपितु बहुरंगी चुनरी थिक। मण्डलजी शोषण केर चर्चा तँ अवश्य करै छथि मुदा शोषित आ शोषक अथवा शोषित केर सन्तान आ शोषक केर सन्तानक बीच घृणाक वातावरण उतपन्न नहि करै छथि। मण्डलजी इतिहाससँ सबक लइ छथि इतिहासक घावपर नोन नइ छिड़कै छथि। ई इतिहासक सन्दर्भ लऽ लोककेँ वर्त्तमानमे जीबाक प्रेरणा दैत छथि। सामाजिक दृष्टिकोणसँ ई बड्ड महत्वपूर्ण बिन्दु अछि। ऐ तरहक बात कोनो साहित्यकारकेँ कालजयी बना दैत छैक। मण्डलजी मिथिलाक एवं मैथिलीक एक मानवीय धरोहर छथि - लिविंग human Intangible Heritage.

मण्डलजी कोनो अड्डाबाजी अथवा गुटबाजीमे विश्वास नहि करैत छथि। राजनीति छोड़ि देलैन तँ छोड़ि देलैन। आब खाँटी रचनाकार थिकाह। रचनाक अलाबे किछु नइ करै छथि। केवल हिनकर शब्द आ

बिम्बपर बहुत किछु लिखल जा सकैत अछि। ओकर मानवीय मूल्य एवं आदर्शक महत लिखल जा सकैत अछि। हुनक जीवन शैली आ जिनगीक उतार-चढ़ावपर लिखल जा सकैत अछि। हिनकासँ पुरस्कार सम्मानित हएत; पुरस्कारसँ ई की सम्मानित हेता? ई बात हम बिना कोनो पूर्वाग्रहक लिखि रहल छी।

आब बात करी रचनापर। हिनक रचना “इन्द्रधनुषी अकास” सरिपहुँ कविताक प्रकार, छोट-पैघक हिसाबे, भावनाक प्रवाहक हिसाबे, अनेक विषयमे होबाक कारणे बहुरंगी चुनरी अछि। अतेक विस्तृत विधा आ विषयकेँ समेटबाक कारणे ऐ संकलनक नामकरण ऐसँ उत्तम नहि भऽ सकैत अछि : वैविध्यसँ भरल, मनोरंजक, रंगारंग, दीवास्वप्न, सोहनगर-मनोरंजक आ मनोहारी अकास। ऐमे जीवनक यर्थाथ अछि, कविक कल्पनाक संसार अछि, उपमा आ अलंकार अछि, जीवनक दर्शन अछि, माटिसँ सिनेहक उद्गार अछि, गीत अछि, भाव अछि, अर्थ विन्यास अछि, प्रेमक अनुभवजन्य परिभाषा आ प्रवाह अछि, प्रकृतिक अनुराग अछि, ग्राम्य-जीवनक झांकी अछि चीर प्राचीन आ चीर नवीन विचार अछि।

“इन्द्रधनुषी अकास” नामसँ अपन लिखल एकटा छोट कविता स्मरण अबैत अछि, आ स्मरण अबैत अछि ओ परिस्थित जइसँ प्रेरित भऽ पाँच वर्ष पहिने इन्द्रधनुषपर एक छोट कविताक निर्माण केने रही। परिस्थिति ई छल जे हमर पाँच वर्षीय पुत्र शषांक हमरासँ जिद्द करए लागल जे ‘हमरा इन्द्रधनुष देखाउ।’ मुदा देखाऊ कोना! घोर समस्या। किछु काल सोचमे पड़ि गेलौं। अन्तत: कम्प्यूटर खोलि इन्टरनेट चालू कऽ ओकरा इन्द्रधनुषक अनेको फोटो देखा देलिऐक। शषांकक बालशुलभ मोन प्रसन्न भऽ गेलै। रातिमे सुतबासँ पहिने मोनमे आएल जे ऐपर किछु लीखी। पेन आ कागत लऽ लिखैले बैस गेलौं। सोचल कविता लिखल जाए। कविताक शीर्षक सेहो फुरा गेल- ‘इन्द्रधनुषक विन्यास’ कविता

स्वत: प्रारम्भ भऽ गेल-

“सुरुजक इजोतसँ भरल आकास दग्ध केतेक अछि
गर्मीक धाहसँ मोन विदग्ध केतेक अछि
कोना करी एहि प्रचण्ड गर्मीमे शीतलताक आभाष
कोना करी टहटहाइत इजोतमे इंद्रधनुषक विन्यास?
मुदा हारि मानब हमर प्रकृतिमे केतए अछि
एकाएक बुझाएल जेना इंद्रधनुष अतए अछि।
मोन हरियाएल ब्यौंत फुराएल इंद्रधनुषक निर्माण हेतु
कल्पनाकेँ सकार कय इन्द्रधनुषक रचना हेतु
सोचल कोना नइ हएत इंद्रधनुषक विन्यास?
टहटहाइत सुरुजदेवकेँ ऊपर आँजूरसँ पोखैरक पानि छीटि,
सुखाएल धरतीकेँ हरिअर करबाक हेतु कऽ लेब एकटा
छोट मुदा यथार्थक इंद्रधनुषक विन्यास।
फेर की सभ भऽ जाएत सोहनगर,
की धरती आकि अकास।”

आब बिना एमहर-ओमहर भटकने जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कविता संग्रहकेँ देखी।

कविताक ई पोथी मैथिली साहित्य केर एकटा अविस्मरणीय धरोहर अछि। हरेक छोट आ पैघ कवितामे किछु सन्देश, किछु संस्कार आ किछु नव विचार प्रस्फुटित होइ छइ।

लोक मिथिलासँ बाहर पलायन करै छैथ तँ मण्डलजीकेँ कचोट होइ छन्हि। मुदा जखन लोक मिथिलासँ साफे रिश्ता समाप्त कऽ

आनठाम बैस जाइ छैथ तँ मण्डलजीक हृदय जेना भोकासि पाड़ि-पाड़ि कानए लगैत छन्हि। ऐ बातक सहज अनुभूति उड़ियाएल चिड़ैमे परिलक्षित होइत अछि-

“उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जेतए
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसैर जाएत डीहो-डावर।”

देखू! देस परदेस केतौ जाऊ मुदा अपन माटि आ अपन संस्कृतिसँ अपनाकेँ बिमुख नइ करू। साइत यएह बात थिक ऐ कविताक मूल। अगर आँखि मूनि पलायन करैत रहब आ अवसर एवं सफलता मात्र पेबाक कारणे अपन डीह-डावर सदाक लेल तियागि लेब तँ भला अहाँ केहेन मनुक्ख! अहाँक केहेन संस्कार? छोट कविताक माध्यमसँ केतेक पैघ आ मर्मक बात बजैत अछि जगदीश प्रसाद मण्डल केर कवि मोन! समाजशास्त्रक push आ pull factor अतए स्वत: आबि जाइत अछि।

एक आर कविता-

“चल रे जीवन...।”

अहाँकेँ रोकि लेत। कविता पढ़ु, ओकर शब्दक युग्मकेँ देखू आ कविताक संग अपने-आपकेँ गतिमान बना लीअ। ने कविता रूकत आ ने अहाँ। कविता पढ़ैत जाऊ कल्पना संसारक दुनियामे घुमैत जाऊ। अलंकारसँ मतभिन्नता भऽ सकैत अछि मुदा कविताक प्रवाहमे तँ

प्रवाहित भाइये टा जाएब। वाह रे वाह! एहेन आसाधारन सम्बन्ध कविता आ पाठकक बीच! जीवन गतिशील थिक। ई बात अनेको कवि अनेको भाषा आ कालमे अपना-अपना ढंगसँ कविताक माध्यमे कहने छथि। मुदा अही बातकेँ सर्वहाराक शब्दावलीसँ कहब। कहब की चलैत पहियापर एना बैसाएब कि पाठककेँ जोश आबि जाइक। ई कला मण्डलजीमे छन्हि। कविताक किछु अंश देखू-

“किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटतो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।
समय संग चल, समय संग चल
ॠतु संग चल, ॠतु संग चल
गति संग चल, गतिया गति चल
मति संग चल, मतिया मति चल
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।”

हँ, कवि केवल गतिमान होमाक प्रेरणा टा नहि दइ छथि। ओ कहै छैथ जे जोश संगे होशमे रहू : गति संग चल/ मति संग चल/ गति-मति संग चलिते चल।

‘सासु-पुतोहु वार्ता’ कवितामे जेनरेशन गैप आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटत। जखन कविता पढ़ब तँ लागत मनोरंजक अछि। जखन सोचब तँ लागत एकटा अनुभवजन्य विश्लेषण अछि। एक-एक शब्दक

चयन कविताकेँ समाजसँ सीधे जोड़बामे प्रभावकारी अछि। ई कविता ऐ बातक साक्षी अछि जे मण्डलजीमे कथाक पात्रक अंतःकरणमे घुसबाक विलक्षण प्रतिभा छन्हि। स्त्रीगणक जखन बात करै छैथ तँ स्त्री, पुरुषक बात करए काल पुरुष; सासुक काल सासु आ पुतोहुक चारचाक क्षण पुतोहु। ओहने शब्दवाली, ओहने परिवेश, ओहने कविताक प्लाट।

"अपनेपर हँसै छी... ।"

शिक्षाक घटैत स्तर, परीक्षामे नकल अथवा चोरि, घूस दऽ नोकरी प्राप्त करबाक तरीका, अवसरवादी नेता लोकैनक पॉपुलिज्म आ शिक्षा मित्र इत्यादि केर माध्यमसँ किछु पाइ मासिक भत्तामे राखब, ओहि लेल मुखियासँ नेता आ अधिकारी धरि घूसक प्रचलन आदि प्रथापर सोझे-सोझ प्रहार अछि। भयमुक्त भेने सहजतासँ जनताक भाषामे जनताक समस्याक विवरण कवितामे करबाक साहस केलैन अछि मण्डलजी। जेकरा फबलै से बिना पढ़ने नकल कऽ परीक्षा पास कऽ डिग्री हासिल कऽ कोहुना लाख-डेढ़ लाख टकाक ब्यौंत कऽ नोकरी हथिया लेलक। भाँरमे जाउ शिक्षा बेवस्था या चौपट्ट होथु विद्यार्थी! शिक्षामित्र लोकैनकेँ ऐसँ की मतलब???

"बाट" कविता कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कविता यदि तोर डाक शुने केऊ न आसे/ तबे एकला चलो रे/ केर स्मरण करबैत अछि। संगहि-संग गीताक मूल मंत्र "कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेषु कदाचन" अर्थात अहाँक अधिकार कर्म तक सीमित अछि। तँए अहाँ कर्म करैत जाऊ, फलक इच्छा नइ करू... केर सेहो पुनर्स्थापित करए चाहै छथि।

कवि भावुक सेहो छथि। होबाको चाही। भावुक नइ भेल तँ कविताक कोना रचना करत कवि! कविक भावुक मोन गीतमे बहय लगै छइ।

"गीत-२" मे किछु एहने दशाक वर्णन थिक।

भावनासँ द्रवित मोन बाजत तँ कोना? बोल कन्ना फुटतै?

“मुहसँ बोल कन्ना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छै
टीससँ टिसकै छै छाती
लहि-लहि लटुआएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना... ।
आशाक सभ मेटेलै
बाटे सभ घेराएल छइ
केकरो कहने किछु ने भेटत
अपने बेथे बेथाएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना...
चोटसँ चोटाएल छै मन
ढहि-ढहि कऽ ढनमनाइ छइ
तैयो हँसि-हँसि नाचय गाबए
राति-दिन बड़बड़ाइ छइ
मुहसँ बोल कन्ना... ।”

अही तरहेँ जाल आ गालक उपमा लऽ कवि लोककेँ अगाह करै छैथ : जहिना जाल सभ तरहक माँछकेँ पकड़ैत अछि, परन्तु अगर मल्लाह जालकेँ ठीकसँ नइ ओछेलक आ काबूमे नइ केलक तँ जाल फाटि जाइ छै, माँछ भागिओ जाइ छइ। तहिना मनुष्यकेँ अपन बोलीपर संयम करक चाही-

“शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल
देखैमे जहिना विकराल

तहिना ऐछो महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखियेमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइये
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकेँ के कहए
डोका-काँकोर धरि फँसैए।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे... ।”

जाल कविता छायावाद आ याथार्थवादक बीचक कविता अछि। जालक अनेक यंत्र तथा जालसँ माँछ मारबाक प्रक्रियाकेँ मूल मानि एक देसी कविताक विन्यास करबाक अनुपम क्षमता कविमे छन्हि।

विचार तँ विस्तारपूर्वक अनेको कवितापर लिखल जा सकैत अछि।

हिनकर ई कविता संग्रह हाथक आंगुर जकाँ थिक। सभ आंगुर स्वतंत्र अछि, मुदा सभ जुड़ल अछि तरहत्थीसँ। तहिना हिनकर रचना “इन्द्रधनुषी अकास” नामक मालामे गांथल पैंतालीस (45) गोट कविता

स्वतंत्र अछि- विषय, भाव, शब्द–चयन, प्रेम, उपमा आदिक स्वभावसँ परन्तु अन्तत: सभ कविता एक तागसँ गाँथल अछि ओ ताग थिक जगदीश प्रसाद मण्डलक व्यक्तित्व आ दृष्टिकोण।

सभ कविता एक-सँ-बढ़ि कऽ एक अछि। “माटिक फूल, गोधन पूजा, झगड़ा, नजैर, भभूत, पुरुषार्थ, अगहन, केना मेटत गरीबी इत्यादि किछु एहेन कविता अछि जेकरा पाठक बेर-बेर पढ़ता।

मैथिली कविता संसारमे ऐ अनुपम धरोहरकेँ स्वागत अछि। पाठक जँ कविताकेँ मिथिलाक परिवेशमे बिना कोनो पूर्वाग्रहसँ अध्ययन करैथ तँ ऐ कविताक सरोवरमे जेतेक डुमकी लगेता तेतेक नवीनता आ स्फूर्ति प्राप्त करता। ऐमे कोनो सन्देह नहि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

अड़ेर डीह टोल, मधुबनी

मन-मणि

मढ़ि-मढ़ि मणि मनकेँ
प्रज्वलित करै छै जीवनकेँ
धुआ-काया पकैड़-पकैड़
दर्शन दइ छै दिव्यधन्यकेँ।

जखने मन मणि बनै छै
छिटकाबै ज्योति धरतीकेँ।
अपन बाट अपने देखा
चरण छुबि धरतीकेँ।

कानि-कानि दुख मेटबए सभ
नाचि-नाचि नचारी गबैए।
आर्त स्वर गाबि आरती
अपन-अपन बेथा सुनबैए।

छी अमूल्य मानव तन-धन
चिन्ह बिना औषधि अछि भारी।
चेतू-चेतू आबो चेतू
कानि कहै छी भैयारी
कानि कहै छी...।

श्रेष्ठ जीव मनु मानव कहबै
मनुखपन उदेस जेकर।
भेद-कुभेद मनु मानव बीच
मेटबै छै कर्म ओकर
मेटबै छै... ।


चल रे जीवन

चल रे जीवन चलिते चल।
संगी बनि तूँ संगे चल
जौवन चल जुआनी चल
जिनगानी संग मर्दगानी चल
चिन्तन संग चिणमय चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

यात्रीकेँ आराम कहाँ छै
यात्रा पथ विश्राम कहाँ छै।
ओर-छोर बिनु जहिना जिनगी
तहिना ई दुनियोँ पसरल छै।
पकैड़ मन तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

ग्रह नक्षत्र सभटा चलै छै
सूर्ज तरेगन सेहो चलै छै
दोहरी बाट पकैड़ चान
अन्हार-इजोतक बीच चलै छै।
देखा-देखी चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

बाटे-बाट छिड़ियाएल सुख छै
संगे-संग बिटियाएल दुख छै।
काँट-कुश लह लहैर-लहैर
गंगा-यमुना धार बहै छै।
परेख-परेख तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटतो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

समय संग चल, समय संग चल
ॠृतु संग चल, ॠृतु संग चल
गति संग चल, गतिया गति चल
मति संग चल, मतिया मति चल
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

गतिए संग लक्ष्मी चलै छै
सरस्वती मतिए चलै छै।

विश्वासक संग अशो चलै छै
तही बीच जिनगियो चलै छै।
साहससँ सन्तोष साटि-साटि
धैर्य-धारण धरिते चल
चल रे जीवन चलिते चल।

टुटए ने कहियो सुर-ताल
हुए ने कहियो जिनगी बेहाल।
जहिए समटल जिनगी चलतै
बनतै ने कहियो समय काल।
बुझि देखि तूँ चलिते चल
चल रे जीवन चलिते चल।

की लऽ कऽ आएल एतए
की लऽ कऽ जाइ जाइ छी?
सभ किछु एतए छोड़ि-छाड़ि
अजस-जस लऽ पड़ाइ छी।
निखैर-निखैर कऽ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।


धोब घाट

धोब घाट जाबे नइ जाएब
मलि झाड़ि चिक्कन नइ हएब..!
देह मनक काह-कूह
छोड़ि ओकरा केना पएब..!
थाल-कीच जहिना जनैम
कुआर-कमल कहबैए..!
तहिना काह-कूह बीच
मन बुइध सेहो सिरजैए..!
मन बुइध सिरजैए... ।

धोइब घाट ओ घाट छी
पाप धुआ पुन बनैत रहैए।
अज्ञान-ज्ञान राति-दिन
रगैड़ सान चढ़बैत रहैए।
बदैल अन्हार इजोतमे
छोड़ि राति दिने कहबैए।
जेकरे दिन तेकरे छी राति
लोक-वेद स्वर तानि कहैए
लोक-वेद स्वर कहैए... ।
बारह-घन्टाक बँटबारा फुसि

जेठक दिन राति कहैए।
तहिना माघ महि महिया
उनटा-उनटा सेहो कहैए।

उला-पका राति-दिनकेँ
साले-साल सुर्ज सुड़कैए।
सुख-आरामक पहर छीनि
हँसि-हँसि राति-दिन कहैए
हँसि-हँसि राति-दिन कहैए।

धरतीसँ सिर उठिते अकास
सोर बनि जड़ि पकड़ैए।
ऊपर धरती पसैर अकास
तहिना असमानो पताल कहैए।
सात तल जहिना अकास
तहिना पतालो पतिआएल छै।
ऊपरसँ जहिना अकास कहै छै
तहिना धार धड़ि धरतियो कहै छै।
धार धड़ि धरतियो कहै...।

बढ़ैत वृक्ष अकास जहिना
सोर बनि सिरो सिरजैए
वृक्ष सिर्फ ऊपर देखि-देखा
सोर ससैर दू बाट धड़ैए।
एक बाट ससैर पताल

दोसर घाट अकास धड़ैए।
बाँसक ऊपर-निच्चाँ जहिना
गिरह-गिरहमे सीर निकलैए।
गिरह-गिरहमे सीर निकलैए।

अद्भुत खेल विधातो रचि-रचि
दिन-राति रंगमंच बदलैए।
लगले ससैर सिर चढ़ि
गिरहे-गिरह सीर पकड़ैए
बड़ू, बरहा बानि बनि-बनि
लटैक डारि धरती पकड़ैए।
फुसिया, पनिया पोलहा-पोलहा
दिन-रातिक खेल रचैए।
दिन-रातिक खेल रचैए।


सासु-पुतोहु वार्ता

ओसार पूबरिया बैस सासु
पड़ल पुतोहुकेँ देल धाही।
अकैड़ कऽ मकैड़ बजली-
देहक पानि लऽ गेलह हाही।

घर पछबरिया पुतोहु पकड़लैन
धाहीक छिटकल ओर।
लुक्खी सदृश ओर पकैड़
कसि कऽ धेलैन छोर।
पनिए तँ पसैर देहमे
पीब गेल सभटा पानि।
की करब, फुरिते कहाँ अछि
कहाँ पड़ल छी जानि।
उठितो-बैसतो असकताइ छी
तैयो, ससैर-ससैर सड़कै छी।
जाबे ई जीबै छैथ
छाहैरमे छिछिआइ छी।
छाहैरमे छिछिआइ छी।

खेल खेल खेला-खेला
खेलाएल खेलड़ी खेल खेलबह।

तहिएसँ खेल जिनगी
खेल-खेलाड़ी संग रहतह।
वामा-दहिना केम्हरो तकबह
ढंस हेतह सभ भेलहो-भेल।
लास जकाँ लसिया-लसिया
विश्राम-बाट चढ़ैत जेबह।
अबिते ओहन दिन देखि
केलहा अपन मन पड़तह।
सुमैर-सुमैर सुमार सुमेरक
पाथर-छाती पथरा बनेतह।
पाथर छाती पथरा बनेतह।

हिनके धाही पकैड़-पकैड़
धाह-बोखार लगबै छी।
अलिसा-अलिसा ओछाइन पड़ि
बेमरयाह कहबै छी।

हमरे सोझहा झूठ बजै छह
किए कहतह कियो बेमरयाह
अपन मन जेहेन मानह
सएह बनि-बनि रहिते रहिहह।
तैयो फेर कहै छिअह
पुतोहुक सुख आब जनलौं।
पूर्बेक उधियाएल पछिमो दिस
पुतोहु-सासु सेहो बुझलौं।

बेस कहै छैथ, बेस कहै छैथ
बेटा-बेटी भेद केतए?
एक बेटी जाएत घरसँ
दोसर तँ लगले अबैए।
एकमे गुर गुरुआइ करैत
दोसर हुकुम चढ़बैए।
रंग-रंगक शब्द बदैल-बदैल
छाती हृदय सटबैए।
छाती हृदय सटबैए।

करब निचेन गप कहियो
नहि तँ आजुक काज मराएत।
गपे-गप ससैर-ससैर
रोग-वियाधि सेहो पकड़ाएत।
रोग-वियाधि सेहो पकड़ाएत।
❑

बौड़ाएल बटोही

जहिना कोबर कनियाँ-नुकाइत
तहिना बाटो नुकाएल छै।
अछैते घरमे रहितो रहैत
नजैरसँ कतियाएल छै।
चुटकी बजा जेना कनियाँ
तहिना धकचुकबए बाटो बटोही।
आँखिक सोझ रहितो रहैत
पाबए ने कहियो राह बटोही।
पाबए ने कहियो राह...।

दिन-राति चलितो-चलैत
देखए ने करवनो खुजैत कपाट।
पट्टामे पट्टा सटि-सटि
सदिखन बन्न रहै छै दुआरि।
आठो पहर दिन-राति घुमै छै
देखि ने पेबैत पड़ाएल पथिक।
करवैन केमहर घुसैक-फुसैक
पाबि ने पाबए पथ पथिक।
पाबि ने पाबए...।

बन्न आकि खुजल केवाड़
नुकाएल नजैर नइ ताकि पबै छै।
ठेला-ठेली कहैत चलै छै।
बिनु देखल अनभुआर कहि-सुनि
देखनिहार भू-आर कहबै छै।
अनुभुआर भुआर बीच
सदएसँ एकरार होइत एलैए।
एकरार करार बनि-बनि
करार-एकरार कहैए
करार-एकरार...।

अपन-अपन सभ लूरिए-बुधिए
जनम लैत धरतीपर।
माए-बापक पुन-परसादे
पबैत पथ पृथ्वीपर।
अद्भुत खेल खेलैए दुनियाँ
दुनियोँक भरमार छै।
जेहने खेल खेलेनिहार खेलाड़ी
हारि-जीत पकड़ैए।
ऊपर-निच्चाँ सिर ससरै छै
केतौ निच्चाँ केतौ ऊपर।
होनी-अनहोनी कहि-सुनि
बदैल-बदैल खसैए।
बदैल-बदैल...।

सात तल जहिना छै ऊपर
तहिना नीच्चों निचियाएल छै।
शिखर पहाड़ चढ़ैले
बाटो-घाट ढेरियाएल छै।

बाटे बीच बटोही बनि-बनि
बाटे-बाट वौआइ छै।
हँसैत-खेलैत चलैत
साँझूपहर ठेहियाइ छै।
कियो जाए चाहए सुरलोक
स्वर्गक बास कियो चाहए।
कियो चाहए बैकुण्ठ जाइले
तँ कियो चाहै गौलोक।

बाटे बिला बुइध
बाटे बिसैर गेल।
जेम्हरे जे चलल
तेम्हरे पहुँच गेल।
छुटि गेल मनोकामना
छुटि गेल कामनाक भूमि
कामनो कमि-कमि
छलैक गाबए झुमि-झुमि
छलैक गाबए...।



अपनेपर हँसै छी

ठक विद्या विद्यालयसँ
नीकहा डिग्री किनलौं।
शिक्षामित्रक उजैहियामे
हमहूँ नोकरी पेलौं।
लाखे रुपैआमे
दशो कट्ठा जमीन गमेलौं।
गुरुदक्षिना देने बिना
गुरुआइक भार उठेलौं।
दिन-राति गुरुआइ करै छी
मुँह भरल मधुकलशसँ
जे निकलत सएह मधुर
सुनैत रहू अस्थिरसँ।
आरो बात सुनबै छी
अपनेपर हँसै छी।

मात्रा घुसका-फुसका
शब्द बनेलौं ठूठ डारि।
अक्षर काटि ईटा बनेलौं
साहूल खसा देलौं डांरि।
तीरछा-तीरछा चेन्ह लगा
कोने कानी लेलौं नाओं।
बाहरे-बाहर सोझ-साझ
उठि-बनि गेलै सौंसे गाओं।

पुरने घरक ईटा जोड़ि-जोड़ि
नवका घर बनबै छी।
अपनेपर हँसै छी।

पुरनाकेँ पुराण कहि-कहि
नवका चालि सिखबैत एलौं।
धर्म सनातन कहि-कहि
अर्थ-जाल फेकैत एलौं।
इचना पोठी छानि-छानि
डेली वाइ डेली भरलौं।
गुबदी मारि बिहुसै छी
मन कनैत, हँसैत तन
कठहँसी हँसि हँसै छी।
अपनेपर हँसै छी।

धन की? केकरा कहबै
धन यौ भाय..!
गाए-माए छी एक्के
पुछि लियौन यशोदा माइ।
बिनु धनक धनिक जहिना
ताम-झाम देखबैए।
देखि-देखि आँखि करि करूआ
कननी आँखि कहैए
लाजे आँखि मुनै छी।
अपनेपर हँसै छी।

हेहरा गाछक फल खा-खा
हेहरपन्नी सीख सिखै छी।
दिन-राति हहैर-हहैर
निच्चाँ ससैर खसै छी।
उनटा मुँह आगू घुमा
कल्याण-कल्याण रटै छी।
क्षणे-क्षण पले-पल
रीत-नीति घटबै छी।
रीत-नीति घटबै...।

गालक सितार बना-बना
राग-पुराणक स्वर साधै छी।
राग-तान मिला-मिला
वेद-पुराण गबै छी
वेद-भेद, भेद-वेद
आँखि मुइन देखै छी।
मुनले-मुनल तर आँखिये
सुरत देखि झखै छी
अपनेपर हँसै छी।
अपनेपर...।



धोबि पाट

किनछैर धार धोबिपाट बनल छै
बामी-दहिनी बीच पड़ल छै।
ठेहुन पानिसँ भीत्ता महारक
खाढ़ी-खाढ़ी रूप गढ़ल छै।
अपना सीमा रोकि-रोकि पाट
तिरछा-तिरछा धारा चलै छै।
जहिना ले-ऊँच पाट मढ़ाएल
तहिना ले-ऊँच ठाढ़ धोबिया छै।
एक ओरीकेँ पकैड़-पकैड़
उनटा-उनटा पाट पटकै छै।
रेहे-रेहे सटल मैल
खाढ़-खाढ़ी पटैक झरै छै।
खाढ़-खाढ़ी... ।

तीन ताल पकैड़ पेबिते
चिन्ह-पहचिन्ह तीनू करै छै।
दू पाटन बीच पड़ि-पड़ि
रचल-बसल मैल संग छोड़ै छै।
जुग-जुगसँ जकैड़ जकड़ल
पटका-पाबि-पाबि संग छोड़ै छै।
गुड़ैक-गुड़ैक गहे-गहे
पानिक संग-संग सेहो बहै छै।

सहस्रोसँ रचि-रचि बेवस्था
कोणे-सान्हिये पकैड़ लेने छै।
उनटा-पुनटा देखि-देखि धोबि
गरे-गर उनटा पटकै छै।

दंगल बीच पहलवान जहिना
लपैक बाँहि पकड़ै छै।
छाती-पीठ सटा फेकै छै
पाट धोबिया सीखै छै।
पाट धोबिया...।

एक धैर्य टुटि-टुटि दोसर
बालिक शक्ति पबै छै।
सात शर्त्त पालनकर्त्ता
मौत-वेमौत पबै छै।
तँए कि बैलिक बल मेटाइ छै।
सुग्रीव-अंगद कहै छै।

समय साक्ष्य शीशा सिरैज
ऐनाक रूप धड़ै छै।
पबिते रूप अपन ऐनामे
शोर समाज कहै छै।
शोरे समाज समाज शोरे
अपन वृक्ष लगबै छै
वृक्षिक इष्ट इष्ट वृक्षक
अपन-अपन पबै छै।
अपन-अपन...। ❑

साँझ

जिनगीमे साँझ कहाँ छै
छी दिन-रातिक मिलन बेल।
एक सिरजन दोसर उसरन
बदलब छी मात्र खेल।
अपन गतिए सभ चलै छै
चाहे सुर्ज हो वा ग्रह-नक्षत्र।
तहिना देवो-दानव चलै छै
बनि रक्षक चाहे भक्षक।
चाहे गंगा हो वा जमुना
धार पेट धारण करै छै।
तही मध्य ने सरसतियो
भोर पराती कुहैक गबै छै।
भोर पराती...।

आलय-हिमालय ओ कैलाश
विश्राम भूमि बनल छै।
बाट-घाट ओ तीर्थ-वर्त
अनवरत बनि पड़ल छै।
सभ दिनसँ आबि रहल
बाल-सियान बदलैत रहल।
उमेरे आकि बोधे बाले

अनिर्णित प्रश्न बनल रहल।
अनिर्णित प्रश्न... ।

जहिना सोर पाड़ि साँझ कहए
सुतैक इशारा सेहो दइए।
तहिना ने आँखिसँ
जागैक सुर-पात सेहो भेटए।
घड़ी कहाँ कहियो बुझलक
साँझ-भोरक किरदानी
एक चलिया चालि पकैड़-पकैड़
मुस्कानीक सुर-तान भरैए
मुस्कानीक सुर-तान... ।

बिनु जिनगानीक जिनगी
मनुख ठठ्ठर कहबै छै।
जहिना कौआ खएल मकै
खेत ठठेर कहबै छै।
खेत ठठेर कहबै छै।


सात्त्विक भाव

सात्त्विक भाव उगै ओतए छै
जेतए सात्त्विक भूमि उर्वर छै।
हवा-पानि जेतए सात्त्विक छै
तेतए भाव लहलहाइत रहै छै।
जेतए दोसर हवा चलैत हो
मटियाएल पानिक धार बहैत हो
चसगर, चटगर बोल जेतए नित
तेतए केना सात्त्विक भाव जगैत हो।
तेतए केना सात्त्विक भाव जगैत हो।

रंग-बिरंगक रूप गढ़ि-गढ़ि
रंग-बिरंगक चालि चलैत।
रंग-बिरंगक मंत्रणा दऽ दऽ
शब्द मात्र सात्त्विक रहैत।
जखने मन कलशैत सात्त्विक
किछुओ नइ कठिन रहि पबैत।
सात्त्विक शान्त्वना सदिखन
शान्त-चित्त सात्त्विक बनैत
शान्त-चित्त...।

विघ्न–बाधा रोकि नइ पाबए
हँसैत-खेलैत मानव चलैए।

लक्ष्य बना चलए सदैतकाल
संकल्पक संग सात्त्विक चलैए।
दृढ़तासँ सदैत डेग बढ़बए
मूर्त रूप बनए सात्त्विक भाव।
जे भावे सएह भाव नै
भाव, कुभाव संग-संग सुभाव
भाव, कुभाव संग-संग सुभाव।


दिव्य शक्ति

दिव्य शक्ति पबिते मनुज मन
दिव्य ज्योति बिखड़ैए।
सगतैर एक्के रश्मि बिलैह
दिव्य-भूमि वसुधा कहबैए।
दिव्य-भूमि वसुधा कहबैए।

गंगा सद्दश धार जेतए
नीक-अधलाक विचार करैत
सभकेँ पार केनिहारि गंगे
अनवरत गतिए वहैत रहैत।
अनवरत गतिये बहैत रहैत।

दिव्य भूमि बनि-बनि वसुधा
धरा-धम कहबए लगैत।
नहि रहैत भेद तेतए मनुजमे
सुर-धामक कपाट खुजैत।
सुर-धामक कपाट खुजैत।

जेतए विराजए वसुदेव
वसुधा वएह कहबैए।

नन्द-नन्दक मंत्र सुमैर
आनन्द वन भरमैए।
आनन्द वन भरमैए।

पाँचम कला बनि जे बीज
मनुज मन विरजैए।
डेगे-डेग डगैर-डगैर
सोल्हम कला पबैए।
सोल्हम कला पबैए।


उड़ियाएल चिड़ै

उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोरव घोघ भरतै जेतए
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसैर जाएत डीहो-डावर।
छोड़ि-छाड़ि सभ किछु अपन
रखैत मन खाली स्मृतक।
रखैत मन खाली स्मृतक।

ओहन स्मृति स्मृते की
जे मने-मन घुरिआइत रहैए।
पसैर नहि पबैत जे कहियो
तरे-तर खिआइत रहैए।
ताड़ सद्दश छुबए अकास
कलैश कहाँ डारि बनबैए।
रसगर फलक चरचे की
सोनाएल-सकताएल फड़ैए।
सोनाएल-सकताएल फड़ैए।

नढ़िओ-कौआ कहाँ पुछै छै
कहाँ पुछै छै बालो-बोध।

भरिसक सभ बिसैर बिसैर
छिऐ ओहो कोनो गाछेक फल।
वृक्षक शोभा तरवैन बढ़ै छै
फल-फूलसँ जरवैन लदै छै।
शीतल-सुन्दर हवा सिरैज
बाट-बटोही अराम पबै छै।
बाट-बटोही अराम पबै छै।


रणभूमि

ओर-छोर बिनु भूमि कुरुक्षेत्रक
एक आबए एक जाए धीर।
साधि-साधि तरकस सजा
रंग-बिरंगक सधए तीर।
युद्धभूमि संसार केर
भोगिनिहार योद्धा रण-वीर
रसमे डुमल रसिक शिरोमणि
देखए सदए-सदए भऽ धीर।
देखए सदए-सदए भऽ धीर।

ज्ञान-कर्म बीच बसए धर्म
अँगेज चलए सदैत कर्मवीर
जेतए बसी सएह भूमि ने
मातृभूमिक बनैत हीर।
मातृभूमि तँ मातृभूमि छी
सिरजए सदए भऽ गंग।
शिवसिर चढ़ि दुनू गाबए
की गंग की भंग।
की गंग की भंग।

मुँह चमकबए ज्ञान सरूपा
दोसर पक्ष कहबैए कृष्ण।

तेसर जाल पसाइर-पसाइर
दु:शासन, अर्जुन बीच कृष्ण।
तीन तीर बेधने दुनियाँकेँ
दैविक, भौतिक ओ अध्यात्म।
बेरा-बेरा देखि तीनू केर
धर्म-अधर्म बीच महात्म।
धर्म-अधर्म बीच महात्म।

तन रोग मन सोग
अनिवार्य खेल जिनगी केर
सटए पड़ै दीन दुनूसँ
मक्खन ओ मिसरीक लेल।
दैवी दाह तँ चलिते रहतै
की राति की दिन।
तैसंग चारू कात नचै छै
खिच-खिच बाँहि लइए छीन।
खिच-चिच बाँहि लइए छीन।

सम दृष्टिक हथियार तेज
जे देखए तेकरा-ले।
दूधो-लाबा विष सिरजए
सदिखन देखू जिनगी-ले।
बिना प्रेमी प्रेम केतए
प्रेमास्पदक पकरू बाट।
नाचि-नाचि, बिहुसि-बिहुसि

देखइ प्रेम सरोवर घाट।
देखइ प्रेम सरोवर घाट।

जेहने मढ़ल शंख घाट केर
तेहने शीतल सरोवर पानि
तन पवित्र मन केर सिंचू
सक्कत विवेक बना ठानि।
करए शुद्ध तन-मन केर
पहिल पहर नइ छोड़ू जानि।
दिन-रातिक रहस्य बुझि
हुसू नइ करवनो जानि।
हुसू नइ करवनो जानि।


सान-धार-धारा

अबैत जखैन मनुखमे सान
शान पेब चलए लगैए
एक दोसरमे सान चढ़ा
परिवारक शान बनबए लगैए।
परिवारक शान बनबए लगैए।

चढ़िते सान परिवारमे
बर्खा-बून बनि धरियाए लगैए
धरिआइत-धरिआइत धरिआ
धारा बनि धड़धड़ाइत चलैए।
धारा बनि धड़धड़ाइत चलैए।

अपन-अपन माटिक रसे
अपन-अपन सभ धार सजबैए
संग मिलि चालि चलि-चलि
नीक-बेजाए विचार करए लगैए।
नीक-बेजाए विचार करए लगैए।

जइ बर्खाक जेहेन बून
तेहने ने तेहेन धार बनबैए

धार बनि धड़धड़ा धार
अपना गतिये गीत गबैए।
अपना गतिये गीत गबैए।

जे धारा सिरजए गंगा
कमला कोसी ओ महानन्दा
ओइ धाराक धार धड़इ
मानैए कहाँ कोनो फंदा।
मानैए कहाँ कोनो फंदा।


पपीहाक गीत

सुनिते गीत पपीहा केर
धड़-धड़ धड़कन धड़कए
षटरस स्वर लहरीमे
चारू-दिशा सदि छलकए।
चारू-दिशा...।

धरती अकास बीच सदए
जल-थल सिरजन करैए
कानि-अकानि बीच सदए
हँसि-गाबि देखबैए।
हँसि-गाबि...।

सानि सिनेह सदए सिरैज
नयन नीर ढुलकैए
रहितो धाराक धार संग
रूप अपन सजबैए।
रूप अपन...।

रंग-रूप सिरैज सदए
शिखर-सौन्दर्य चढ़ैए

देखि-देखि बिहिया बिहुसि
आनि अपन जगबैए।
आनि अपन...।

प्रेम प्रेमिक रूप देखि
जमुना बीच सौभरि जेना
पबिते प्रकाश पूनमक
चढ़ि ऊपर आबए तेना।
चढ़ि ऊपर...।

आनि जानि धार बीच
हेलैत-डुमैत चलैए
जीवन-मरणक लीला यएह
सभकेँ सभ देखैए।
सभकेँ सभ...।


विषधरक बीख

सुति उठि निकैलिते आँगन
लप-दे धेलक विषधर।
तड़बाक बीख मगज चढ़िते
लटुआ खसलौं पेरापर।
जखने देखलक पहिने जौहरी
छाती पीट-पीटि फुकलक शंख।
अवाज सुनि कुत्ता अकानि
भुकि-भुकि देलक हाक।
भुकि-भुकि देलक हाक।

अचेत देखि जौहरी बाजल
झब-दे मंगाउ चटधारी।
मरि गेल बाटे विषधर
बगदल यात्रा (सगुन) चटधारी।
नहि उतरल बीख चटियौने
तैयो बँचल छै प्राण।
बपहारिक संग बेथा गाबि
कहिया हेतै प्रेमीक त्राण।
कहिया हेतै प्रेमीक त्राण।



मिथिला केहेन

अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
सभ दिन कमला-कोसी डुमलौं
अन्हर-बिहाड़ि, दानो-दुख सहलौं
कानि-खीज संगे-संग रहलौं।
किसान-बोनिहारक वंश गढ़ि
धरती-अकासक बीच खेलेलौं।
आबो बुझियो मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
अहीं कहू भाय...।

पसैर चौर करमीक लत्ती
बुइधिक लत्ती लतड़ौलक।
नैतिकताक फल-फूल सजा
हँसि-गाबि जीवन पौलक।
जगत-जननी, जनक-जानकीक
मिथिलाक तस्वीर जेहेन
आबो कहू भाय मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?


मौसमक मुस्की

दिन घटत आकि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइ छै।
साले दिनक समय कत्ते होइए
लीलाक रंग बदलै छै।
अपन-अपन सनेस बिलैह
सुरभि-सुगन्ध पसरै छै
खसल-पड़लमे जान फुकि-फुकि
सोग मुक्त बनबै छै।
सोग मुक्त बनबै छै।

समय ने केकरो संग छोड़ैए
ने केकरो संग दइ छै।
अपन-अपन कूटल-पीसल
दुनू हाथ समटै छै।
देखल दिन केना बितै छै
देखिते देखि ससरै छै
मृत्युसय्यापर मन तड़पै छै
बेरथक बाट पकड़ै छै।
बेरथक बाट पकड़ै छै।

खेल-खेलए चाहलौं जिनगी केर

बनि खेलौना गुड़ैक गेलौं
अन्तिम साँस विरह विरहा
नोर छोड़ि किच्छो ने पेलौं।
नोर छोड़ि किच्छो ने पेलौं।


आशा

खुशीक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू
सोग ने सुधरए वचनसँ
रोग नइ उपदेशसँ।
कर्तव्य कर्म तड़कस उठा
आशाक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू।
मगन भऽ जीबैत चलू।

कण-कणसँ पहाड़ बनै छै
बुन्न-बुन्न सत् सागर
अणु-अणु सोग उपजाबए
कारी घटा बनि बादर
सभ समेट अँगेजैत चलू
मगन भऽ चलैत चलू।
दिन-रातिक बीच संसार
ससैर-ससैर ससरैत चलू।
ससैर-ससैर ससरैत चलू।

खने मेघौन खने उगरास भऽ
पाबि-पाबि चलैत चलू।

तीत-मीठक भेद भूला
पानियो पानि पीबैत चलू।
मगन भऽ चलैत चलू।
लगन धऽ चलैत चलू
सघन भऽ चलैत चलू
सघन भऽ चलैत चलू
सघन भऽ चलैत चलू।


आँखि

छलैक आँखि बदैल तरैंग
कोन रचैता देखलैन मोर।
निवस्त्र कऽ कऽ केलैन सिरजन
कानि अखौंसी पोछए नोर।
नाक नचए पहिर नकौसी
चक्र टकड़ाबए चढ़ि-चढ़ि सिर
केहेन भेल ई बीच मधुरक
सटि गेल तौलाक बीचक हीर।
सटि गेल तौलाक बीचक हीर।

सदिखन दोहरी खेल रचि
रखला सेहन्तगर नाओं
चेहरा-मोहरा काटि-छाटि
ठाढ़ भेल बनि-बनि गाओं
सुनि कान सनसना कुकि
पकैड़ सुगन्धित बाट सु-आन
गुण दऽ गुणी बना-बना
कालचक्र संग गाबए गान।
कालचक्र संग गाबए गान।



मधुरस

जंगल जे बास करए
बनफूल-फल से खाए
इच्छित मन लोढ़ि-बीछ
मधुरस सतैत बनाए।
मधुरस सतैत... ।

एक बन पसैर विश्व
काटि-छाँटि देश बनाबए
अपना-अपनी बाट गढ़ि
सभ चाहए मधुरस पाबए।
सभ चाहए... ।

कटुरस मधुरस बीच भेद की
मात्र सीमा पार करब
टपिते-टपान दुर्गकेँ
खटरस बनि-बनि रूप धड़ब।
खटरस बनि-बनि... ।

नजैर तानि विश्वरूपा केर
बिष-रस बाट बँटैए
अपना-अपनी हथिआ सभ चाहए
बाटे-बाट झगड़ैए।

बाटे-बाट... ।

पौरुष पाबि पुरुषार्थ जगए
नहि तँ कुंभकर्णी सुतए
सिरैज वंश सखा रावणक
सखा-सखी सटि वृक्ष बनए ।
सखा-सखी सटि... ।

पाबि पुरुषार्थ पौरुष केर
रोकए नइ केकरो बाट
जिन्ह भाव सदि पाबि-पाबि
सिरजए नित नूतन घाट ।
सिरजए नित... ।

देश अनेक लोक अनेक
भाव अनेक भावना अनेक
बीच रचि चालि मायाक
भाव दुरभावना बनैत ।
भाव दुरभावना... ।

सिरजए मधुरस अमृतरस केर
नहि तँ दुरभावना जगत
अन्ध भऽ अन्हरा अन्हारमे
अमृत रस केना भेटत ।
अमृत रस... । ❑

बीआ

बीआ खसए जेहेन धरती
तेहने तँ गाछो उगैए।
रौद-बसातक सह पाबि
संगे-संग चलबो करैए।
संगे-संग चलबो...।

लइते जनम धरतीमे
डेग उठा अकास चढ़ैए।
काले-क्रमे घुसैक-घुसैक
दुनू वास करए लगैए।
दुनू वास करए...।

सिरजित भऽ स्वयं सिरजक बनि
हँसि-खेल बिलहए सनेस
भक्तक आह सुनि जेना
पकैड़ भगवन सिनेही भेष।
पकैड़ भगवन...।

चक्रक चक्का पकैड़ चुहैट
लगबए आस जिनगी केर
धरती-अकासक ओर दू

बाट नहि सोझ भूमा केर।
धार अनेक धारी अनेक
विशाल वृक्ष धरती केर
खोलि हृदय सेवा निमित
प्रेमी प्रेमास्पद केर।

दुर्ग अनेक ढाल अनेक
दुर्गम बाट धरती केर
शक्तिसँ शक्ति सटि
सिरजै शक्ति शक्तिर केर।

अकास बीच देखि सदैत
सूर्ज संग-संग चान
अनेक तरेगन बीच एक
गाबए सदा गीतक तान।

खेल अजीव ऐ सृष्टिक
सिनेही सिनेह गुड़काबए गेन
हारि-जीतक मान न माने
बना रखए सदैत प्रेम।

जोग भोग सिरजए सदए
एक-दोसराक विपरीत चलए
दू पाटनक मध्य-बीच
सिरैज सृष्टि आगू बढ़ए। ❑

महजाल

महजाल पसैर पुरनी पोखैर।
माटि जलधर कात केचली
उड़ि उड़ि सदए चालि बदलैए
पाबि गदियाएल जुआनी
नाचि-नाचि जिनगी बदलैए।
नाचि-नाचि जिनगी...।

एक-दोसरकेँ ठोठ दाबि
गैंची-अन्है रूप धड़ैए
पाबि प्रकृतक वेढ़ंगी चालि
कानियौं खीज जिनगी धड़ैए।
कानियौं खीज...।

नीकक गुण छी नीक निकुत
अधलो किए पुस्तैनी छोड़त
अधला जँ चालि-वानि बदलए
नीक किए अभिमानी छोड़त।
नीक किए अभिमानी...।

भलेँ भभैक जाए इचना-पोठी
तेकर नहि परवाह करू

सजि रूप सरिता सरोवर
धीर भऽ धीरज धरू।
धीर भऽ धीरज... ।

ससरैत देखि महजालकेँ
जरैत जाठि चिकैड़ कहैए
गतिया-गतिया रूकि ठमैक
सभ किछु सुनबैत चलैए।
सभ किछु सुनबैत... ।


बाट

चलि-चलि बाट बनबैत चलू
सोचि-विचारि चलैत चलू।
तीन चास जोतिते-जोतिते
ढेपा फुटि-फुटि माटि बनए।
चिक्कनमे सभ चाहे चलए
चलिते-चलिते बाट बनए।
मलैड़-मलैड़ ससरैत चलू
मखैड़-मखैड़ गबैत चलू।
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

पाँच पएर पड़िते-पड़ैत
चुनमुन माटि करए इशारा।
बनि पहरूदार दिन-राति
हँसि-हँसि दैत इशारा।
संगी-संग अकड़ैत चलू
डेग-डेग मिलबैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।
चलि-चलि बाट...।

बाट बनए जहिया जेतए
सोझ-साझक मांग करैए
ऐगला-पैछला मिला-मिला
बीचो-बीच बढ़ैत चलैए।

गीताक गीत गाबि-गाबि
जिनगी परखैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।
चलि-चलि बाट...।

सदिखन सनातन सहैम-सहैम
नव कनियाँक सदृश कहए
नव सूत जेबर पेब-पेब
राग वसन्त भरैत रहैए।
जँ किरदानी (कमैनी) नइ तँ जुआनी की
जँ जुआनी नै तँ मर्दगानी की।
बिनु युद्धभूमिक मर्दगानी
अछिया पड़ल जिनगानी छी।
अछिया पड़ल...।

चेतू-चेतू चित्त चेतन
समवेत संगीत बजबैत चलू
झुमि-झुमि मलड़ैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।
जिनगीक गीत गबैत चलू।
राग-तान तनैत चलू।
अप्पन बात कहैत चलू।
अनको बात सुनैत चलू।
अनको बात सुनैत चलू। ❑

डभियाएल डगर

नित नित्यानन निनाएले निकलए
देखए दुनियाँक दीन-दशा।
मधुआएल मन करुयाएल आँखिये
झलफलाइत देखए दशा-दिशा।

कोनो बाट एकपेरिया कहबए
खुड़पेरिया कहबए दोसर।
जोहैत सदए जेर जइ
बनैत बाट नव तेसर।
बनैत बाट... ।

भोरहरबा अन्हार रहने
नीनपनी देलकैन पछाइर।
राड़ी-डबहाड़िक बीच पड़िते
हाथ-पएर देलकैन गछाड़ि।
ओझरी सोझरबैमे
नित्यानन भेला वेदम।
हारि नइ थकान थकिते
अबए लगलैन हिआ दम-दम।
अबए लगलैन... ।

विह्वल भऽ आर्त्त राड़ी
बिजैक बाजल कानि-कलैप।
संग मिलि सभ दिन रहलौं
लेलकैन बाँहि लपैक।
लेलकैन बाँहि...।

फूल फुलाइत जहिना सबतैर
तहिना ने फुलाइ छी।
पूरि संग रौद-बसातमे
संगे-संग उड़ियाइ छी।
एक चढ़ए देव सिर ऊपर
दोसर चढ़ए महा-अकास।
बाँकी सभ गलि-पचि
ससैर-ससैर पहुँचए पताल।


लज्जैत

बिनु लज्जैतक जिनगी ओहने
बिनु परनक प्रतिष्ठा जेहने।
रस पाबि हरियाइत जहिना
नीरस होइत सुखाइत तहिना।
मधुरस रिसै विवेक वृक्ष
सिरजए सदि जे लज्जैत।
लज्जैत हीन जीवन ओहने
गैचिया पाताल धड़ैत जेहने।
गैचिया पाताल...।

लज्जैत तँ शोभा जिनगीक
सजिते होइत आभूषित।
तीत-मीठ भेद बिनु बुझने
हँसि-हँसि होइत विभूषित।
लज्जैतक लत्ती अमर
सड़ितो-मरितो सिरजए शक्ति।
तर-ऊपर रससँ रसि
लगए करए सदैत भक्ति।
लगए करए सदैत...।

जिनगीक पद्धति रंग-बिरंगक
नीक-बेजाए बेड़ाएत केना।

पूबसँ उत्तर धरि सबतैर
मिलि समाज चलैत जेना।
मुँह-कान बिनु समाजक
रूप समाज धड़ैत जेना
बिनु लज्जैतक जिनगी ओहने
बिनु प्रणक प्रतिष्ठा जेहेन
बिनु प्रणक...।


गीत-1

ओढ़ि दुपट्टा नम-गम केर
बति वसंती बौड़ाइ छै।
खटमीठ रस चुसि-चुसि
तिरपित भए औनाइ छै।
तिरपित भऽ...।

सुरभि सुगन्ध पीब सिहैर
कू-कू कए कुकूआइ छै।
चेत मन मधु स्वर तानि
बिलैत-बिलैत बिलाइ छै
बिलैत-बिलैत...।

दसो दुआरि दृष्टि दौगाए
चनैक चैत चुनचुनाइ छै।
ओढ़ि दुपट्टा नम-गम केर
बति वसन्ती वौड़ाइ छै।
बति वसन्ती...।



गंग स्नान

उठि भोरे छोड़ि घर गाम-घर
चललौं गंग स्नान करए
घर-परिवार सभ समेट
मरि मन मनन करए।
मरि मन मनन...।

अन्हरोखक राह नहि सुझै
अन्हरोख अनबुझल बाट नहि सुझै
बिनु विचारल बाट नइ सुझै
बिनु सोचल सोच नइ फुरै
बिनु जोग भोग नइ बुझै
पापहारिनी कष्ट विवारनी
मन विसवास करैए
आगू तँ आगू अहाँ बुझब
मुदा मन तैयो कहैए
मुदा मन...।


फनकी

फनकी बना फसा शिकारी
फँसौलक सौंसे जंगलकेँ
बगरा-बुगरीक चर्चे केते
फँसौलक हाथी-घोड़ाकेँ
फँसौलक... ।

खढ़-पातक बना-बना
बुनलक सक्कत जाल ।
घुमा फेकैत भीड़ो कहाँ
बनि गेल तरे-तर महजाल ।
बनि गेल... ।

खढ़क फनकी लगल बगराकेँ
तइमे फसि गेल सियार ।
डोराक फनकी लगल साँपकेँ
भ्रमक फनकी फसल बुधियार ।
भ्रमक फनकी... ।

सभ दिन फनकी बना-बना
जाल-फाँस लगबैत एलैए
लोभे-लाभ फँसी नहि
तइयो फँसैत एलैए
तइयो फँसैत... । ❑

सभ किछु छै जालेमे

सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
घुरियबैक लूरि जखने हएत
सभ किछु भेटत बातेमे।
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल।
देखैमे जहिना विकराल
तहिना ऐछो महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखियेमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइये
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकेँ के कहए
डोका-काँकोर धरि फँसैए।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे।


गंगा नाहाए

गंगा नाहाए सभ जाइ छैथ, बाबू
अहूँ किए ने जाए चाहै छी।
गहनक पूर्णिमा पड़ै छै
तैपर कातिक मासो छी।
तैपर कातिक...।

के सभ जा रहल छैथ बौआ
जा कऽ कनीए भाँज लगाबह।
केना-केना के सभ जेता
झब-दे कनी बुझने आबह।
बुझने आबह...।

पढ़ुआ काका, गुरु कक्काक
संग छित्तन-मित्तन दुनू भाँइ।
कनियाँ काकी सेहो जेती
भौजीक संगे लालो भाय।
भौजीक संगे...।

बिनु संगीक संग गेने
ऐ उमेर बैमानी हएत।

तोरा केना असकरे कहबह
मनक संग प्रपंची हएत।
मनक संग...।

अहाँ विचार फुट देखै छी
आरो लोकैनक आरो विचार।
बीचमे नइ बुझि पबै छी
कहू कनी हृदैक विचार।
कहू कनी...।

गंगा तँ दुनियाँक धारा छी
बहए सदा सभ कोण।
घेर बान्हि जँ अपने बुझब
थिक ई अपन मन।
थिक ई अपन...।

दुनियाँक एक-एक मनमे
गंगा धार बनल छै।
जे जानै-पहचानै ओकरा
नित स्नान करै छै।
नित स्नान...।


गोधन पूजा

सरस्वती-लक्ष्मी दुनू बहिन
मिलि-जुलि गोधन पूजलैन।
मन संकल्प सिरैज दुनू
चलैक दिशा मन ठनलैन।
एक चचलि मटिआरी रस्ते
दोसर धेलैन गोलोक बाट।
दिलीपक अमूल्य सेवा देखि
पंचागम रचि सजलैन घाट।
पंचागम रचि... ।

जे गाएक गोबरसँ
गोबरधन पहाड़ बनबै छै।
ऐ गोबरधन बखारमे
अन्न-कण अम्वार लगबै छै।
वएह गोबरधन उठा कृष्ण
जान बँचौलैन ब्रजवाला।
एक शक्ति एक शक्तिमान
कहबै वृन्दावन वाला।
कहबै वृन्दावन... ।

झाँट-बिहाड़ि, ठनका-पाथर सहि
मुरली तानि देलैन नन्दलाल।
क्षीर सागर किनछैड़ बिरैज
सरस्वती लक्ष्मी देल भाल।
एके गाछक एक पात एक शील कहाबे
शील-शीला बनि
पात पवित पात कहाबै।
पात पवित...।


माटिक फूल

हँसि-फूलि चढ़ए देव ऊपर
फलैक कवली बल ऊपर
भूख-पियास मिलि आफन तोड़ए
जड़ि जनमए धरतीपर।
जड़ि जनमए... ।

लीला अजब अछि दुनियाँकेँ
धरती-अकास छिड़िअबए क्षीर
भीर-कुभीर देखि-देखि
ससरए सदैत संग समीर।
ससरए सदैत... ।

एक फूल शोभा सुख पाबए
दोसर बाल-बोध सिर ढाबए
सृष्टि सिरैज तेसर हँसि गाबए
राग-विरागक ताल मिलाबए।
राग-विरागक... ।

उड़ि सुगन्ध समा धरतीसँ
चालि चलाबए चाक कुम्हार
मृत कुआँ तर-ऊपर वसुधा
सानि-बाटि लगबए अम्बार।
सानि-बाटि... ।

पड़िते-फुहार चढ़िते अखाढ़
महमहबए दिन-राति सुगन्ध
कोणे-कोणी चारू कोण पसरए
निसाँ नचति बनि मदान्ध।
निशाँ नचैत...।

जे कहियो रोदियाह रौदमे
ठोंठ सुखाबए भूखै-पियास
धरि-धरती धीर हीर हृदय
पेब, पेब जिनगी केर आस
पेब, पेब...।

उठि-बैस ओंघराइत छिछलए
कानि-कलैप दऽ दन्ड-प्रणाम
अश्रुधार बीच डुमकी लगा
जमुनिया धार बीच प्रणाम
जमुनिया धार...।

सदिखन प्रेमी बाट जोहि-जोहि
छन-छन छनछनाइ छै मन
दाबानल-बड़बानलक लहैरमे
जठरानल बीच तरपै छै मन।
जठरानल बीच...।


झगड़ा

भाँग पीब भकुआ शिव
चुप भऽ बैसला आसन।
धो-धा सिलौट ओ लोढ़ी
चढ़ा लेलैन पार्वती बासन।

लग आबि पाँजर बैसते
बीन-बिन्नी उठलैन मन तन।
नजैर उठा देखिते
कड़ैक बजलैन तन मन।
सिहैर छाती डोलिते
थर-थर कपलैन मन तन।
कलपैत मन खीस
खिसिया धेलैन राग तानि तनि तन।
अधे-छिधे पुछल प्रश्न-
"अहाँ कहू केकर छी प्रेमी
गंगा आकि अपन?
सिर सजौने छी गंगाकेँ
पतिअबै छी हमरा।
पुरुखक कोनो ठेकान नै
बुझि पड़ैए हमरा..!"

कनखिया शिवजी बजला-
“भाव लेल प्रश्न भावसँ
उठाउ सदिखन आगू।
चिन्मय रूप समेट हृदय
बढ़ाउ डेग सदि आगू।”


नजैर

आँखि पुछलक-
दीदी, सभ किछु देखतो
किछु ने देखै छी।
कलपैत मन देखि
भरि-भरि दिन कनै छी।

नजैर उत्तर देलक-
सगतैर तँ फूल छिटाएल-ए
गुणसँ भरल-पुरल।
रस चुसैक चुसनी जेकरा
भेटतै तेकरा मीठका फल।


कमलाधार

कमल-नयनसँ उगैत अश्रुधर
संग मिलि धार बनबै छै।
समरस भऽ रंग-रूप बिसैर
नयन-कमल बनबै छै।
काटि-खोंटि एकबट्ट केनिहारि
नयन कमल बनबै छै।
करत उकठपन सदिकाल।
सभ मिलि सोचि-विचारि कऽ
कमल नयन गर माल।
कमल नयन...।



बाल कविता

पुत्र- बाबू यौ, पनिया दूध किए बेचै छी
एकरे ने पाप कहै छै?
जानि-बुझि जे करए ढिठाइ
तेकरे जमदुत पकड़ै छै?

पिता- कहलह बौआ मधुर बात
सिहैर-सिहैर हृदय सिहैर गेल।
अजीव खेल धर्म-पापक
हँसि-हँसि जिनगी टुटैत गेल।

पुत्र- की अजीब खेल धर्म-पापक
गुरुवर-गिरिवर बनि कहू।
कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म
बिलगा-बिलगा बुझा कहू।

पिता- बाल-बोध रहितो बौआ
जिनगीक रहस्य-रस तकलह।
जिज्ञासाक उठैत जुआरिमे
तकैत-तकैत तकलह।
तकैत-तकैत...। ❑

भभूत

लगिते चाइन बाबाक भभूत
चेलबा हँसि-हँसि बाजल।
छाउर केना भभूत बनि
छजनीपर जा अँटकल।
सुनिते चेलबाक पेटक बात
पेट खोलि आसन लगौलैन।
आँखि खोलि नजैर मिला
प्रभुताक दर्शन करौलैन।

जिद्दी चेलबा मानता ओहिना
प्रभुताक परमान मंगलकैन?
पैरुख नाओं प्रभुताक कहि
झटपट अपन जान छोड़ैलैन।
जिद्दी कि जिद्दी चेलबा छी
पैरुखक परमान मंगलकैन?

सामर्थ कहि आँखि घुमा गुरु
चटपट अपन काज ससारलैन।
जेहेन मनरीक जेहेन जिद्दी
तहिना तेतबे भार उतारलैन।
तहिना तेतबे... । ❑

झूठ-साँच

झूठ-साँचक साँच केते
उत्तरी-दछिनी ध्रुव जेते।
कोनो चलैत शुभ्र समीर संग
कोनो चलए वोन-झाड़क।
कोनो चलए धरती-धरातल
कोनो चलए शब्द जालक।
दुनूक बीच अन्तर ओते
उत्तरी-दच्छिनी ध्रुव जेते।
उत्तरी-दच्छिनी...।

सत् बनबैले एक झूठ
हजार-हजार चालि धड़ैए।
मुदा एक साँचक शक्ति
सदए ढनमनबैत रहैए।
जहिना घनघोर घटाकेँ
हवा उड़बैत रहैए।
तहिना देखिते बनवासी
लोकक सुन-गुन पबैए।
लोकक सुन-गुन...।

झूठ-साँच कहब केकरा?
जे शब्द हजारो हजार बेर

बजलो उत्तर ठामहि रहैए।
मुदा ओ (झूठ) तँ बेर-बेर
सभ बेर बदलैत रहैए।
रूप सजि नव श्रृंगार कऽ
मनकेँ मोहैत रहैए।
शुभ्र ज्योति पड़िते सदैत
चेहराक रंग सेहो बदलैए।
चेहराक रंग सेहो...।

मुँह खोलि किए ने
झूठक डाकैन दइत रहैए।
साँचक पजरे-पजरा
चलि-चलि जान बँचबैत रहैए।
केतौ छाँह केतौ अछाँह
मायापुर सिर सिरजैए।
मायापुर...।


नव दुनियाँ

चलू यौ भैया चलू यै बहिनी
नव दुनियाँ बनबए चलू।
सभ स्वतंत्र छी अपना-अपनी
अपन दुनियाँ बनबए चलू।
चौंसैठ कलासँ बनल जीव
आनन्द कला सजबैत चलू।
चारि कला सिरजैबला
संग मिलि संग चलैत चलू।
संग मिलि...।

आगूक जे शेष कला छै
ओ तँ अपने सिरजए पड़ै छै।
जँ से नइ तँ, जहिना छी
तहिना काहि काटए पड़ै छै।
नहि कठिन छै स्वतंत्र जन-ले
सोल्होकलाक कलाकार बनब।
विश्वामित्र, विश्वकर्मा बनि-बनि
नव दुनियाँक सिरजन करब।
नव दुनियाँक...।

जहिना गाछक डारि मधुमाछी
जगह टेबि घर बनबैए।

तहिना ने सभ अपना-ले
जगह देखि दुनियाँ बनबैए।
सबहक अपन-अपन दुनियाँ
मन मृग विचार कहैए।
विचार बीच विचरण करैत
विचार बीच विवेक कहैए
विचार विवेक कहैए।



पुरुषार्थ

हँसि-हँसि हम बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।
झाँपि-तोपि अपन किरदानी
मुँह खोलि बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

नोकरीमे जिनगी बितेलौं
पराधीन भऽ जिनगी जीलौं।
अपन पीठ अपने थपथपा
मालिकक सान देखा रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

सहि-मरि जे जिनगी जीलक
आत्मविसवास संग सेवा केलक।
पवित्र मातृभूमिक सेवामे
पवित्रतासँ जिनगी लगौलक।
तेकरा हम ललकारि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

जाधैर नोकरी करै छेलौं
सर्भिसमैन कहबै छेलौं।

जहियासँ नोकरी छुटल
सर्भिससँ सेवा-निवृत्ति कहेलौं।
शब्देक ताना-बाना बुनि-बुनि
जिनगीक हाथ ससारि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

उचित-अनुचितक विचार केना
समरस मुँह बना बाजब
घूस-घासक चरचे केना
सकुचल मन, मुँह खोलि बाजब।
तैयो बोली झटैक-झटैक
झटहा मारि-मारि बाजि रहल छी।
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।


सरस्वती वन्दना

साले-साल किए अबै छी
क्षणे-क्षण अबैत रहू
हर क्षण हर मनकेँ
अमृतसँ भरैत रहू।
क्षणे-क्षण...।

नव शक्तिक नव उत्साह दऽ
सिरजन शक्ति भरैत रहू
कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि
सिनसँ सिनेह सटैत रहू।
क्षणे-क्षन...।

जे हूसल से अप्पन हूसल
तइले किए छी कलहन्त
सभ जागैए सभ सुतैए
एक दिन हेतै सबहक अन्त
नजैर-उठा देखैत रहू।
क्षणे-क्षण...।

देवी अहाँ, मैया अहाँ
भेद केतौ अछि कहाँ

जोड़ि-जोड़ि आँखि उठा-उठा
पले-पल देखैत रहू
क्षणे-क्षण अबैत रहू।


भीड़-भार

अपने पएरे चलिते चलनिहार
दोसरपर नइ भार दइ छै।
मन उपकै चाइलिक खुशीसँ
संग-संग डेगो बढ़बै छै।
लत्ती सदृश दोसर भरे
धुसि-धुसि खसि बाट-घाट।
धारक पानि सदृश फेका
धारासँ टुटैत रहैत लाट रहै छै।
धारासँ टुटैत... ।

टुटिते लाट धरासँ
भीड़ भार बनैत रहै छै।
एक्के-दुइये भीड़ टपैमे
भीरेमे भरमैत रहै छै।
भीड़ भारक दुनियाँमे
भीड़ा-भीड़ी जोर चलै छै।
धक्कम-धुक्काक संग-संग
धक्का-मुक्की सेहो चलै छै।
धक्का-मुक्की... ।

भार बनि नइ भार कहियो
अपन भार दोसरा दियौ।

अपन-अपन कन्हेठ भार
संग मिलि चलैत रहियौ।
लेब साँस आरामक जखने
भीड़े-भीड़ भार पकड़त।
गहुमन साँप सदृश बीख
समय पाबि सेहो लपकत।
समय पाबि...।

कहैले साँपो हरि छी
हरी बेंग सेहो कहबै छै।
नारायण सेहो हरी हर कहबै
नित: व्याकरण बुझबैए।
व्याकरण भाषा निरमाबे
भाषा निरमाबे जन-जन।
जन-जन दुनियाँ भरैम
सोचै-विचारै मन-मन।
सोचै-विचारै...।


सरस्वती हमर

हे माँ सरस्वती
अपना ऐठाम ओइ दिन हे माँ
रस्तेसँ सम्हारि आनब।
भगवतीक रूप जइ दिन
बाँहि पकैड़ अरियाइत आनब।
सोग-पीड़ा दुनियाँक मनुक्खक
मोटरी बान्हि माथ चढ़ौने आएब।
अपन सोग-पीड़ा बना-बना
रक्तक संग सजौने आएब।
रक्तक संग...।

आनक यंत्रणा जखन अपन
संग मिल डेग उठैत चलत।
उत्पीड़ितक कथा-बेथा
ललकार मन भरैत चलत।
वसुन्धराक सिंगार जखन
विश्व सुन्दरी बनि नचत।
तखन, हे माँ सरस्वती
नयन सिक्त प्रेमाश्रु भरत।
नयन सिक्त...।

कलमक नोक जखन अहाँ
प्रवाहित होइत ससरैत रहब
भगवतीक रूप गुण संग
अपना ताल गबैत रहब।
अपन ताल बेताल जखन
संग मिलि संग चलि-चलि
बेताल ताल बनैत रहत।
बेताल ताल...।


अगहन

ठोर रंगि तर-तर करै छै
लोक देखि-देखि मुँह दुसै छै।
लगनक आश छोड़ि-छाड़ि
कुदि-फानि घर अबए चाहै छै।
कुदि-फानि घर...।

कहिया धार कुटाएब हँसुआमे
कहिया धारक सान बनाएब
कातिकक पुर्णिमो बीतल
कहिया देहमे पानि चढ़ाएब।
कहिया देहमे...।

तीन दिन, आठ अगहनमे बाँकी
धड़फड़ बेसी, नइ अगुताउ।
धीरजसँ सभ किछु होइ छै
तैबीच घरक काज सरिआउ।
तैबीच घरक...।

गेल कातिक पाँच अगहनो
आबो किए छी मन्हुआएल।

आब किए छी मनमारि
संग मिलि चलब कटैले
आब किए मानब हारि।
आब किए...।

लोटामे पानियोँ नइ बिसरब
पनबट्टी सेहो नेने चलब।
रतुका नाच बनौआ होइ छै
दुपहर दिन नचबे करब।
दुपहर दिन...।
❑

केना मेटत गरीबी

केना कऽ मेटत गरीबी हो भैया
केना कऽ... ।

अछि भरल सोना माटिमे
भरल अछि हीरा-मोती ।
खुनैक ओजारे अछि गजपट
केना कऽ पेबै मोती ।
सोन बिना कानक जहिना
तहिना ने माटियोक छै ।
ने छै पानि आ ने श्रम छै
तखन कोन आस करबै हो भैया... ।
केना कऽ मेटत... ।

सत्ते कहै छी ओजारो बनलै
नहर खुनेलै कोसीसँ ।
धारक तँ चालिए अजीब
बिनु बरखे पानि औत केतएसँ ।
खादक बदला माटि अबै छै
बोरिंगक पाइपो फुटल छै ।
पम्पिंग सेटक कथे की कहब
तीन बेर साले सिसकै छै ।
तीन बेर साले सिसकै छै ।

अहीं कहूँ केना हेतै यौ भैया
केना कऽ... ।

बिनु खेतक आकार देखने
फसिलक केना पहचान करब ।
उपजल दाही जखने हेतै
कोठीक किए जोगार करब ।
विज्ञान बहुत उन्नति केलकहें
सच्चे कहै छी यौ भैया ।
घासे बिखाह उपैज खेतक-खेत
कोन मनसूबे दुहबै गैया ।
कोन मनसूबे... ।

ललो-चपोसँ काज नइ चलै छै
इमनदारीक नेत बनबए पड़ै छै ।
जाधैर ताबे से नइ हेतइ
मुँह फुलौड़ी बनबए पड़ै छै ।
ललकारा केतबो देबै ।
ताल ठोकि केतबो कुदबै
खलीफा किन्नौं ने बनबै ।
सएह कहै छी सुनियौ भैया
सएह कहै छी... ।


जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रकाशित कृतिः

1. गामक जिनगीः (कथा संग्रह), 2009
2. मौलाइल गाछक फूलः (उपन्यास), 2009
3. उत्थान-पतनः (उपन्यास), 2009
4. जिनगीक जीतः (उपन्यास), 2009
5. मिथिलाक बेटीः (नाटक), 2009
6. तरेगनः (प्रेरक कथा संकलन) 2010
7. जीवन-मरणः (उपन्यास), 2010
8. जीवन संघर्षः (उपन्यास), 2010
9. बजन्ता-बुझन्ताः (बीहैन कथा संग्रह) 2013
10. शंभुदासः (दीर्घ कथा संग्रह) 2013
11. उलबा चाउरः (कथा संग्रह), 2013
12. अर्द्धांगिनीः (कथा संग्रह), 2013
13. सतभैंया पोखैरः (कथा संग्रह), 2013
14. भकमोड़ः (कथा संग्रह), 2013
15. नै धाड़ैएः (उपन्यास), 2013
16. बड़की बहिनः (उपन्यास), 2013
17. इन्द्रधनुषी अकासः (काव्य संग्रह), 2013
18. तीन जेठ एगारहम माघः (गीत संग्रह), 2013
19. राति-दिनः (काव्य संग्रह), 2013
20. सरिताः (काव्य संग्रह), 2013
21. गीतांजलिः (काव्य संग्रह), 2013

22. सुखाएल पोखरिक जाइठ: (काव्य संग्रह), 2013
23. कम्प्रोमाइज: (नाटक), 2013
24. झमेलिया बिआह: (नाटक), 2013
25. रत्नाकर डकैत: (नाटक), 2013
26. स्वयंवर: (नाटक), 2013
27. पंचवटी: (एकांकी संचयन), 2013
28. गढ़ैनगर हाथ (बीहैन कथा संग्रह), 2014
29. गामक शकल-सूरत: (कथा संग्रह), 2014
30. लजबिजी: (कथा संग्रह), 2014
31. समरथाइक भूत: (कथा संग्रह), 2014
32. अप्पन-बीरान: (कथा संग्रह), 2014
33. बाल गोपाल: (कथा संग्रह), 2014
34. रटनी खढ़: (दीर्घ कथा संग्रह) 2014
35. पतझाड़: (कथा संग्रह), 2014
36. अपन मन अपन धन: (कथा संग्रह), 2015
37. उकड़ू समय: (कथा संग्रह), 2015
38. मधुमाछी: (कथा संग्रह), 2015
39. पसेनाक धरम: (कथा संग्रह), 2015
40. गुड़ा-खुद्दीक रोटी: (कथा संग्रह), 2015
41. फलहार: (कथा संग्रह), 2015
42. खसैत गाछ: (कथा संग्रह), 2015
43. ठूठ गाछ: (उपन्यास), 2015
44. कल्याणी: (एकांकी), 2015
45. सतमाए: (एकांकी), 2015
46. समझौता: (एकांकी), 2015

47. तामक तमघैल: (एकांकी), 2015
48. बीरांगना: (एकांकी), 2015
49. एगच्छा आमक गाछ: (कथा संग्रह), 2016
50. शुभचिन्तक: (कथा संग्रह), 2016
51. गाछपर सँ खसला: (कथा संग्रह), 2016
52. डभियाएल गाम: (कथा संग्रह), 2016
53. गुलेती दास: (कथा संग्रह), 2016
54. मुड़ियाएल घर: (कथा संग्रह), 2016
55. बीरांगना: (कथा संग्रह), 2017
56. स्मृति शेष: (कथा संग्रह), 2017
57. बेटीक पैरुख: (कथा संग्रह), 2017
58. क्रान्तियोग: (कथा संग्रह), 2017
59. त्रिकालदर्शी: (कथा संग्रह), 2017
60. पैंतीस साल पछुआ गेलौं: (कथा संग्रह), 2017
61. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं: (उपन्यास), 2017
62. दोहरी हाक: (कथा संग्रह), 2018
63. सुभिमानी जिनगी: (कथा संग्रह), 2018
64. देखल दिन: (कथा संग्रह), 2018
65. गपक पियाहुल लोक: (कथा संग्रह), 2018
66. दिवालीक दीप: (कथा संग्रह), 2018
67. अप्पन गाम: (कथा संग्रह), 2018
68. लहसन: (उपन्यास), 2018
69. पंगु: (उपन्यास), 2018
70.आमक गाछी: (उपन्यास), 2018
71. सतबेध: (गीत संग्रह), 2018

72. खिलतोड़ भूमि: (कथा संग्रह), 2019
73. चितवनक शिकार: (कथा संग्रह), 2019
74. चौरस खेतक चौरस उपज: (कथा संग्रह), 2019
75. समयसँ पहिने चेत किसान: (कथा संग्रह), 2019
76. भौक: (कथा संग्रह), 2019
77. गामक आशा टुटि गेल: (कथा संग्रह), 2019
78. पसेनाक मोल: (कथा संग्रह), 2019
79. चुनौती: (कथा संग्रह), 2019
80. रहसा चौरी: (गीत संग्रह), 2019
81. कृषियोग: (कथा संग्रह), 2020
82. हारल चेहरा जीतल रूप: (कथा संग्रह), 2020
83. रहै जोकर परिवार: (कथा संग्रह), 2020
84. कामधेनु: (गीत संग्रह), 2020
85. मन मथन: (गीत संग्रह), 2020
86. अकास गंगा: (गीत संग्रह), 2020
87. सुचिता: (उपन्यास) 2020
88. कर्ताक रंग कर्मक संग: (कथा संग्रह), 2020
89. गामक सूरत बदैल गेल: (कथा संग्रह), 2020
90. अन्तिम परीक्षा: (कथा संग्रह), 2020
91. घरक खर्च: (कथा संग्रह), 2020
92. मोड़पर: (उपन्यास), 2021
93. संकल्प: (उपन्यास), 2021
94. अन्तिम क्षण: (उपन्यास), 2021
95. नीक ठकान ठकेलौं: (कथा संग्रह), 2021
96. कुण्ठा: (उपन्यास), 2021

97. पयस्विनी: (निबन्ध-प्रबन्ध), 2021
98. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह), 2021
99. संचरण: (कथा संग्रह), 2022
100. भरि मन काज: (कथा संग्रह), 2022
101. आएल आशा चलि गेल: (कथा संग्रह), 2022
102. जीवन दान: (कथा संग्रह), 2022
103. अप्पन साती: (कथा संग्रह), 2022
104. साहित्यकारक विवेक: (कथा संग्रह), 2022
105. नब बनक नब फल: (कथा संग्रह), 2022
106. सुनयना बेटी: (उपन्यास), 2023
107. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल: (कथा संग्रह), 2023
108. बासभूमि: (कथा संग्रह), 2023
109. टकुआटान: (कथा संग्रह)
110. एकलव्यपन: (कथा संग्रह), 2023
111. एक चुटकी खुशी: (कथा संग्रह), 2023
112. नियति आ पुरुषार्थ: (बाल कथा संग्रह), 2023
113. श्रद्धा: (बाल कथा संग्रह), 2023

Notes